Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-11,Issue-3,December-2017

"जनजातियों की प्राकृतिक - धार्मिक आस्थाएँ"

(गुजरात के संदर्भ में)

डॉ. उर्वी भावसार
इतिहास विभाग
वी.एन.एस.बी.लि. आर्ट्स एन्ड कॉमर्स कॉलेज,
वडनगर (गुजरात)

आदिम जाति के लोगों की जीवन प्रणालिका प्राचीन युग के अंश रूप है जो आज भी देखी जाती है। ये लोग प्राचीन युग से चले आते परंपरित धर्म, रीति-रिवाज़, मान्यताएँ और रूढियों का वहन करते हैं। वे नाना प्रकार के देव-देवी, भूत-प्रेत, वहेम और पशु बलिदानों में श्रध्धा रखते हैं। उनका आर्थिक एवं सामाजिक जीवन भी धार्मिक क्रियाओं से युक्त होता है।

शब्दों और उनकी ध्वनियों में छूपी शक्तियों को वनवासी ज्यादा अच्छे तरीके से समझ सकते हैं। प्रकृति में व्याप्त शब्द की ध्वनि उसे आकर्षित करती थी। इतना ही नहीं पशु-पंछी भी उस ध्वनि से प्रभावित एवम् आकर्षित होते थे। वो स्पष्ट रूप से महसूस करता था कि प्रकृति में कोई ऐसी शक्ति है जो शब्द स्वरूप प्रगट हो के उसे प्रभावित करने आती है और अन्य जड़-चेतन सभी को प्रभावित करती है। इस शब्द सत्ता ने ही समस्त विश्व में मन जैसी शक्ति के अस्तित्व में विश्वास जगाया होगा, जिसने शब्द की गूँज को उसे अपनी पृथक सत्ता मानने पर विवश किया होगा। यहाँ उसने अपना अभेद प्रवृत्ति के आधार पर शब्द और मन शक्ति को एक समझा होगा- 'शब्द ही शक्ति है', 'शक्ति ही शब्द है' ऐसी अनुभूति से ही शब्द ही मंत्र बन गया होगा और मंत्र की उत्पत्ति हुई, जिसमें जादू जुड़ा, तब धर्म ने उसका आश्रय ग्रहण किया किन्तु ज्यादा समय धर्म जादू से जुड़ा नहीं रहा। दोनों अलग हो गये। जादू

लौकिक हो गया, और धर्म विशिष्ट।

शक्तिओं के विविध स्वरूप/प्रकार

आदिम जातियों के लोग, मुख्यतः चार प्रकार की शक्तियों में आस्था रखते हैं जो कि उनके (शक्तियाँ) मनुष्य के साथ संबंध पर आधारित है।

1 रक्षक शक्ति:

गाँव के देवता माने जाने वाली शक्तियाँ गाँव के योगक्षेम की रक्षक होती है। गाँव के निवासीओं द्वारा उनकी सामूहिक पूजा- प्रार्थना की जाति है।

2 उपकारक या दयालु शक्तिया:

आदिजाति समूहों अपने देवता को दयालु मानते हैं। वो मानते है कि, वे प्राणी, वृक्ष, पथ्थर, नदी-नाले या परबत के स्वरूप में सर्वत्र विद्यमान है।इन देवताओं की कौटुंबिक और गाँव के लोग सामूहिक तौर पे पूजा करते हैं। ऐसा न होने पर देवता रूठ जाते हैं और वे अनेक प्रकार के रोग, मृत्यु, फसल की निष्फलता, अकस्मात और कुदरती आपत्तियों का कारण माने जाते हैं। ऐसे देवता प्रायः भारत के सभी आदिम समूहों में पाये जाते हैं।

3 दुष्ट और द्वेषी शक्ति:

भूत, पिशाच, शीतला, बुखार, गर्भपात के कारक देवताओं को दुष्ट और द्वेषी शक्तियाँ मानी जाती है। इन्हे मृत्यु का कारण माना जाता है। इनका निवास स्मशान, निर्जन स्थल या घने जंगलों में माना जाता है, इसी वजह से बच्चों और गर्भवती महिलाओं का ऐसी जगहों पर जाना निषिध्ध है।

4 पूर्वज देवता :

मृतात्माओं में दृढ आस्था उनके पितृओं के प्रति पूज्यभाव और गहरा लगाव दर्शाते हैं। इन आत्माओं को मददगार शक्ति के रूप में पूजा जाता है। ये उनके सपनों में या भोपा जैसे विशेष व्यक्ति द्वारा अपनी ईच्छा या माँगे जाहिर करते हैं।

समाज शास्त्री फ्रेजर ने मानव संस्कृति के विकास को तीन युगों में विभाजित किया है, जादु का युग, धर्म का युग और विज्ञान का युग।

जनजाति के मंत्रों की एक यह विशेषता है कि, इसमें आने वाले शब्द स्वयं वस्तु या क्रिया बन जाते हैं। उदाहरणार्थ अंडे के रूप में रहे परमेश्वर के मन में बहार आने की मनसा हुई और जल पर कमल की उत्पत्ति हुई। भगवान के मुख से जो अमी धारा निकली वो उमा बन गई। उमा ने भगवान से कहा मेरे लिए पति ढूँढो तब भगवानने शिव की उत्पत्ति की। ईस मंत्रों में शब्द पर अधिकार स्वयं वस्तु पर अधिकार है। यहाँ बोलने का अर्थ है हो जाना, अर्थात् बोलने के साथ ही हो जाने वाली क्रियाओं में ही भीलों के मंत्र और अनुष्ठानों की जडें देखी जा सकती है।

आधिभौतिक या अतिमानवीय शक्तियों के अस्तित्व में श्रध्धा वैश्विक है। रोजमर्रा के जीवन में यकायक घटती घटनाएँ जैसे कि, रोग, मृत्यु, अकस्मात और कुछ ऐसी घटनाएँ जिन्हें समझना या समझापाना नामुमकिन सा लगता हो, ऐसी घटनाओं ने आदिम लोगों को द्रश्य जगत के उपरांत अद्रश्य शक्ति या आधिभौतिक शक्ति में विश्वास द्रढ किया। उसी के कारण, उन शक्तिओं के साथ अपने आप को गहनता से जोड़ लिया। एक उन शक्तिओं को रीझाने के तरीके या उन पर काबू पाने के तरीकों - सही या गलत कामों के लिए। दूसरा ईच्छित चीज पाने के लिए उनकी पूज़ा-नैवेध या भक्ति से। पहले तरीके को हम ज़ादू-टोना और दूसरे को धार्मिक अनुष्ठान कहते हैं। आदिजाति समूहों में ज़ादू-टोना और आधिभौतिक क्रियाकलाप उनके धार्मिक रिवाज़ों का हिस्सा है।

आदिजाति के धार्मिक जीवन पर चर्चा करने से पूर्व उनकी धर्मकथाओं और उनके देवी-देवताओं, जो कि उनके मानस एवं विश्व के प्रति उनके नज़रिये को उज़ागर करता है उसे समझना जरूरी है। धर्मकथा या लोककथा उनके मनोजगत एवम् बाह्य जगत और उनके जीवन-यापन के परिचायक हैं और ईनका महत्व वेद और पुराण जैसा है जो उनकी धार्मिक मान्यताओं तथा रीति-रिवाज़ों को प्रभावित एवम् प्रेरित करती है। विश्व एवम् विश्व की उत्पत्ति के बारे में आदिजातिओं में बहुत सारी मान्यताएँ और लोककथाएँ है। लोककथा का काम ज्यादातर विवरण देना है। धार्मिक क्रियाएँ कैसे और क्यूँ होती है तथा उनसे क्या पाया जाता है ये दर्शाना है। ये उनके

ऐतिहासिक पुरूष या वस्तुओं को वीरकथा, पराक्रमगाथा और प्रणयकथाओं के स्वरुप में दर्शाते हैं जो उनके कुल या कुटुंब का भगवान होता है। लोककथा, किसी प्राणी या मनुष्य को जो सामान्य घटनाक्रम का हिस्सा होते हैं उनमें आधिभौतिक या अतिमानवीय शक्तियों का आरोपण करती है। आदिजातिओं में उनके अलग-अलग समूहों- कबीलों, स्थल, गाँव वगैरः, सबकी अपनी-अपनी विभिन्न धार्मिक कथाएँ या मान्यताएँ होती है।

भारतीय आदिजाति समूहों में ज्यादातर हिन्दु धर्म का प्रचलन है। नृवंशशास्त्री, भूस्तरशास्त्री तथा अन्य विद्वानों का यही मानना है। मार्टीन के मुताबिक 'भील' या अन्य पिछड़ी जाति के हिन्दुओं की मान्यताओं से ज्यादा भिन्न नहीं है। हुटन(1931:391-98) अपने सेन्सस रीपोर्ट में दर्शाते हैं कि, हिन्दुत्व और आदिजाति के धर्मों के बीच भेद करना बहुत कठिन है। हिन्दुधर्म की तुलना में आदिजाति धर्म में कुछ चीज़ें और देवता की संख्या ज्यादा है, जो हिन्दु मंदिरों में नहीं दर्शाये गये। उनके अनुसार ये वो चीज़ें हैं, जो उत्तर वैदिक हिन्दुत्व को दर्शाती है। हुटन के पूर्ववर्ती कई विद्वानों ने यही बात दर्शायी है। बाइन्स(1891:158) के अनुसार आदिजाति के लोग जो हिन्दु थे और जो धर्म के आदिमजाति स्वरूप में मानते थे उनमें भेद कर पाना कठिन है। एन्थोवन (1901:378) के कथन अनुसार मुख्य हिन्दु जातिओं से आदिजाति के समूहों को अलग कर पाना तकरीबन नामुमकिन है। गैइट (1911:129-30) कहते हैं कि,मनुष्य अपनी समग्र जीवनयात्रा के कौन से पड़ाव पर 'हिन्दु' बना यह कह पाना अत्यंत कठिन है। टेलैन्ट्स(1921:125) लिखते हैं कि एक हिन्दु से आदिजाति के मनुष्य को अलग कर पाना बहुत मुश्किल है। धुर्ये (1963:20) के अनुसार आदिजाति का धर्म, प्रचलित हिन्दु धर्म का प्राथमिक स्वरूप है। एल्विन के मतानुसार भारतीय आदिजातियों का धर्म शैव मत से गहराई से जुड़ा हुआ है और वे ये भी निर्देशित करते हैं कि, आदिजाति के धर्म और हिन्दु धर्म के बीच भेद करना अर्थहीन है।

आदिजाति के धार्मिक अनुष्ठानों में मंत्र और तंत्र का विशेष स्थान है। जैसे की हमने आगे देखा कि आदिजाति धर्म शैवधर्म से गहराई से जुड़ा हुआ है, आदिलोग शिवजी को ही भूत एवम् तंत्र-मंत्र के जन्मदाता मानते है और शिवजी के भैरव को प्रथम

भोपा का दरज्जा देते है। इस दैवी भोपा के अनुयायी आदिवासी गाँवो में बसते है। वे अपनी गूढ शक्तियों की मदद से गाँववालों के कष्टों को दूर करते है। विविध अवसरों पर होने वाले धार्मिक अनुष्ठानों में ईनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

गुजरात के आदिजाति-भीलों में भी यही मान्यताएँ प्रादेशिक विभिन्नताओं के साथ हम देख सकते हैं। गुजरात के आदिजाति के लोग एक सौ साठ वीरों और नौ लाख देवीओं में आस्थावान है। यह सभी वीर और देवीयाँ गूढ़ शक्तिओं के धारक है। ....

उपरांत वे 'वेह', 'रखी', 'झाँपा-झाँपड़ी' जैसे अन्य आधिभौतिक तत्वों में भी आस्थावान है। वे अपने घर जिसे लोकबोली में 'खोलरूं' कहा जाता है उसे तथा सीम, खेत, पर्बत, झरने सभी को असंख्य गूढ़ शक्तिओं से घीरे हुए मानते हैं।

इस लिए वे घर में, बरामदे में, खेत में सीम में और अन्य जगहों पर गूढ़ शक्तियों की विभिन्न नामों से स्थापना करते हैं। इतना ही नहीं बल्की तीज-त्योहारों पर उनका श्रध्धापूर्वक स्मरण कर नैवेध-भोग चढ़ाते हैं। डुंगरी भील आदिवासी लोग मानते हैं कि उनके पूर्वजों की आत्माएँ वातावरण में घूमती रहती है और आपत्तियों में उनकी सहायता करती है। इसलिए वे पूर्वजों की याद में स्मारक बनाते हैं जिसे 'हमाध' कहते हैं, उसकी विशिष्ट रूप से पूजा एवं अनुष्ठान करते हैं, नैवेध चढ़ाते हैं।

आदिजाति के लोग चर, अचर, सजीव, निर्जीव सभी को आत्मा से युक्त मानते हैं, उदाहरणार्थ डुंगरी भील लोग डुंगर यानी पर्बत को 'भांखर देव' मानके पूजते हैं और 'वंटोल' यानी बवंडर को 'रखी' यानी रक्षक मानते हैं। ये मानते हैं कि अगर उनकी उचित पूजा-आराधना करना भूल गये तो रखी खलिहानों से पका हुआ अनाज उठा ले जायेगा। ऐसा ना हो इसलिए खलिहानों में रखी की मिट्टी से बनी मूर्ति को स्थापित किया जाता है और 'चूरमा' का नैवेध चढ़ाते हैं। रात को रखी अनाज की रक्षा करे इस हेतु बांस के बने छोटे तीर-कमान मूर्ति के पास रख दिये जाते हैं। इसके अतिरिक्त मिट्टी की दो-तीन कोठरियाँ रख दी जाती है। नैवेध से खुश हो कर रखी अनाज से कोठरियाँ भर देगा ऐसा माना जाता है। रखी का स्थान पीपल या बरगत के पेड़ को माना जाता है इसलिए वहीं उसकी मूर्ति रखकर स्थापना की जाति है।

गुजरात के आदिजाति के लोग जिन वीरों में आस्था रखते हैं उनके कुछ के नाम इस प्रकार से हैं- रगतियो वीर, दूतियो वीर, नरसंगो वीर, करतरियो वीर, हूरियो वीर, गोबरियो वीर, स्मशानीयो बाबरियो वीर, आफरियो वीर, पाटकियो वीर, जागरियो वीर, जळियो वीर, अगनियो वीर, हाफणियो वीर एवम् पीपल रखी, खीलरियो रखी, गोतम रखी।

आदिजाति का जीवन अतरंगी है। जादू, मंत्र-तंत्र का गहरा प्रभाव है। इसी प्रकार निर्दोष बहते झरने जैसा प्राकृतिक जीवन भी है। परंपराओं से लिप्त आगे बढ़ता जीवन नैसर्गिक वन और पहाड़ों के बीच अनूठेपन से निखर आता है। गुजराती में कहावत है कि " बार गाउ ए बोली बदलाय" उसी प्रकार आदि जातियों की बोली में भी फर्क होता है। प्रादेशिक विशेषताओं के साथ भी जैसे वे एक सूत्र से बंधे हो ऐसी अमीट छाप जिज्ञासु मन पर अंकित करते हैं।

संदर्भ सूचि :

- (संपा.) जानी बळवंत, 'वनस्वर', गुजरात साहित्य अकादमी, प्र.सं., गांधीनगर, 2004
- (संपा.) पटेल भगवानदास, 'अरवल्ली पहाड़नी आस्था', तारामती पटेल-अमीत पटेल, दूसरा संस्करण, जामळा, 1988
- मलकाण जयंतिलाल, 'पंचमहालना आदिवासीओ', गूजरात विद्यापीठ, अमदावाद, 1955
- (तंत्री) सोलंकी सिध्धार्थ, 'आदिवासी गूजरात', खंड-1, गूजरात विद्यापीठ, प्र.सं., अमदावाद, 1978
- A M T Jackson, R E Enthovan, 'Folklore of Gujarat' vol-1, British India Press, Mazgaon, Bombay, 1914
- HasuYagnik,'Folklor of Gujarat', National Book Trust, India, New Delhi,,2002
- L P Vidyarthi& B K Rai, 'Tribal Culture of India', Concept Publishing Company, Delhi, 1976
- P K Mohanthy, 'Cultural Heritage of Indian Tribals', Rajat Publication, New delhi, 1999
- Pramod Kumar, 'Folk Icons and Rituals in Tribal Life'